



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में 'ग्रामीण सड़कों में पुलों के लिए सर्वेक्षण, जांच और डीपीआर तैयार करने' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

पुल निर्माण में 'डेटा-केंद्रित गहन अनुसंधान, भू-तकनीकी जांच और सुरक्षित और लचीला डिजाइन' के महत्व पर प्रकाश डाला गया

भुवनेश्वर, 10 सितंबर 2024: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर 9 से 13 सितंबर 2024 तक 'ग्रामीण सड़कों में पुलों के लिए सर्वेक्षण, जांच और डीपीआर की तैयारी' पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है, जिसमें डेटा-केंद्रित गहन अनुसंधान, भू-तकनीकी जांच के महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा। और पुल निर्माण में सुरक्षित एवं लचीला डिजाइन। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के स्कूल ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर द्वारा किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन इंजीनियर अशोक कुमार बासा ने किया, जो ओडिशा के एक प्रसिद्ध ब्रिज इंजीनियर, इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स इंडिया (आईईआई) के पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान में वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ इंजीनियरिंग ऑर्गेनाइजेशन (डब्ल्यूएफईओ) के कार्यकारी उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। उद्घाटन समारोह में एसएमईसी इंडिया के वरिष्ठ ब्रिज इंजीनियर श्री अश्विनी कुमार पाधी भी उपस्थित थे; प्रोफेसर वी. पांडुरंगा, आईआईटी भुवनेश्वर में सतत शिक्षा के डीन; और प्रोफेसर सुमंत हलदर, स्कूल ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर के प्रमुख। पाठ्यक्रम का समन्वय स्कूल ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर, आईआईटी भुवनेश्वर के डॉ. सुरेश आर. दास और डॉ. उमेश चंद्र साहू द्वारा किया गया था। कार्यशाला में पूरे भारत से पुल विश्लेषण, डिजाइन या निर्माण से जुड़े 40 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम को एनआरआईडीए, भारत सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।

उल्लेखनीय है कि 2012 से, आईआईटी भुवनेश्वर ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ के लिए राज्य तकनीकी एजेंसी (एसटीए) और प्रधान तकनीकी एजेंसी (पीटीए) के रूप में पीएमजीएसवाई (प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना) कार्यक्रम को तकनीकी सेवाएं प्रदान कर रहा है। विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की समीक्षा के दौरान, अक्सर कई कमियों की पहचान की जाती है, जो सुधार की महत्वपूर्ण संभावनाओं को उजागर करती हैं। इस संदर्भ में, प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिनिधियों को ब्रिज इंजीनियरिंग के बुनियादी सिद्धांतों का पता लगाने के लिए एक इंटरैक्टिव मंच प्रदान करना है।

इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. डैश ने इस बात पर जोर दिया कि, हमारे बुनियादी ढांचे में पुलों की महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, भारत में नियमित शैक्षणिक पाठ्यक्रम में पुल डिजाइन की अक्सर अनदेखी की जाती है। पिछली पुल विफलताओं ने पुल के डिजाइन, निर्माण और रखरखाव पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। लगातार पुल टूटने की खबरें चिंताजनक हैं। हालाँकि पुलों को 100 वर्षों तक चलने के लिए डिजाइन किया गया है, लेकिन उनका समय से पहले खराब होना उनकी योजना, डिजाइन, निर्माण और रखरखाव में शामिल सभी लोगों के लिए चिंता पैदा करता है।

भविष्य की गलतियों को रोकने के लिए रचनात्मक रूप से पुल विफलताओं का अध्ययन करने के महत्व पर प्रतिनिधियों को प्रेरित करते हुए, श्री बासा ने कई स्मारकीय पुलों के निर्माण में पेशे के गौरव पर प्रकाश डाला। उन्होंने संपूर्ण और सटीक भू-तकनीकी और हाइड्रोलॉजिकल साइट डेटा संग्रह के महत्व पर जोर दिया और इसकी तुलना सटीक रोग संबंधी रिपोर्टों के आधार पर दवा निर्धारित करने से की। पर्याप्त साइट डेटा के बिना, डिजाइन में कोई भी परिष्कार संरचनात्मक विफलता को नहीं रोक सकता है। उन्होंने पुल विफलता के कई मामलों पर भी चर्चा की, जिसमें बताया गया कि कैसे डिजाइन या निर्माण में छोटी-छोटी गलतियाँ भयावह परिणाम दे सकती हैं।

यह 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पुल डिजाइन के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को कवर करेगा, जिसमें पुल योजना, पुलों के लिए डीपीआर तैयार करना, मिट्टी की जांच, हाइड्रोलिक डिजाइन, पुलों पर लोड आकलन और भूकंपीय विचारों सहित सुपरस्ट्रक्चर, सबस्ट्रक्चर और नींव का डिजाइन शामिल है। लाइटवेट ब्रिज और ब्रिज हेल्थ मॉनिटरिंग जैसे उन्नत विषयों पर भी चर्चा की जाएगी। पाठ्यक्रम में व्यावहारिक अभ्यास और एक निर्माणाधीन पुल स्थल का दौरा शामिल होगा।
